प्रेरणा

शायद सञ्प्रेषण की एक कला जिसकी कलीसिया के अगुओं को सबसे अधिक आवश्यकता है वह है दूसरों को प्रेरित करने की योग्यता। ऐल्डर रविवार की प्रात: चारों तरफ देखते हैं। बिल्डिंग आधी ही भरी है, बेशक उन्हें मालूम है कि मण्डली के सदस्य और उनके परिवार आ जाते तो सारा हॉल भर सकता था। उन्हें यकीन होता है कि चंदा जितना होना चाहिए था उसका केवल चौथा भाग ही है; सदस्यों का रहन सहन तो राजकुमारों जैसा है लेकिन चंदा भिखारियों जैसा। बाहर से कुछ लोग आए हैं, बेशक अगुओं का मानना है कि मोहल्ले के दूसरे लोग वचन को मानते हैं और यदि मसीही लोग उन्हें बुलाते तो वे अवश्य आ सकते थे। इसके अलावा रविवार की इस सुबह में आने वालों के चेहरों से लगता है कि जैसे उन्हें यहां आना अच्छा नहीं लगा। या तो उनके चेहरे पर खुशी नहीं है या उनकी आंखें नींद से भरी हुई हैं, या दोनों ही; वे केवल कुछ ही जानकार लोगों को ''सलाम'' करते हैं और बाहर से आने वाले किसी नये व्यञ्ति के साथ बात नहीं करते। वे गाते भी हैं तो ऐसे जैसे कानों में फुस – फुसा रहें हों; संदेश सुनते हुए वे अपने सिर अवश्य हिलाते हैं। आखिरी ''आमीन'' कहने तक वे ऐसे बाहर जाते हैं जैसे सौ मीटर रेस में भाग लेने के लिए आए हों। ऐल्डरों को यह भी पता है कि उनमें से एक तिहाई लोग रविवार शाम की आराधना में नहीं आएंगे। सबसे बुरी बात यह है कि ऐल्डरों को पता है कि उनमें से अधिकतर लोगों का जीवन मसीही नहीं है; सोमवार से लेकर शनिवार तक उनका जीवन संसार के दूसरे लोगों से अलग नहीं होता।

ऐल्डरों को ज़्या करना चाहिए? विवेकी अगुओं को चिल्लाने, नींद खोने, दुखी होने और अन्त में त्याग पत्र देने के लिए इतना काफी है।

कई बार कलीसिया के अगुवे ऐसे दृश्य को समस्या *के बारे में बात करके* स्वीकार करते हैं। सदस्यों के समर्पण की कमी के बारे में हर सप्ताह घंटों शिकायत करने में ऐल्डरों का समय बीत सकता है। हो सकता है कि वे निराश होकर हिज़्मत हार बैठते हैं और सदस्यों को अविश्वासी होने से ग्रस्त होने के कारण अगली योजना नहीं बना पाते।

कई बार कलीसिया के अगुवे समस्या *से बात करके* जवाब देते हैं। ऐल्डर, प्रचारक या अन्य पुलपिट से बार-बार सदस्यों को पूरे मन से सेवा न कर पाने के कारण उन्हें डांटते फटकारते रहते हैं, चाहे कुछ सदस्य या अधिकतर सदस्य समर्पित मसीही ही ज़्यों न हों। लगता नहीं है कि इससे किसी का विश्वास बढ़ सकता हो।

ज़्या इससे कोई अच्छा ढंग है? जब कलीसिया के सदस्य न तो ठण्डे हों और न गरम, तो ऐल्डरों को ज़्या करना चाहिए? इसका अच्छा ढंग है/कलीसिया के अगुओं को समस्या पर विलाप करते रहने के बजाय सदस्यों को और अधिक विश्वासी बनने में उत्साहित करने

के ढंग तलाशने चाहिए। उन्हें प्रेरित करने की कला सीखने की आवश्यकता है।

प्रेरणा की आवश्यकता

कलीसिया के अगुओं को सदस्यों को प्रेरित करने की चिंता ज़्यों करनी चाहिए? यदि ऐल्डर परमेश्वर के घराने पर ''प्रभु'' नहीं बनना चाहते, तो शायद किसी भी काम को सदस्यों से करवाने का एकमात्र विकल्प यही है कि उन्हें प्रेरणा दी जाए।

प्रेरणा की इतनी आवश्यकता ज़्यों है? मसीही लोगों को परमेश्वर की इच्छा पूरी करने और उसके प्रति विश्वासी रहने में दिलचस्पी होनी चाहिए। यदि अगुवे इस बात की ओर ध्यान दिलाते हैं कि पवित्र शास्त्र ज़्या सिखाता है, तो ज़्या यह सुनिश्चित करने के लिए कि मसीही लोग वही करेंगे जो उन्हें पता चल गया है कि सही है काफी नहीं है?

शायद इतना ही काफी होना चाहिए, लेकिन ऐसा हमेशा होता नहीं है। केवल मसीही बनने का कार्य ही किसी को सिद्ध या ऐसे व्यक्ति नहीं बना देता जो हर प्रकार की परीक्षा में स्थिर रह सके। मज़बूत चेलों को भी कठोर परीक्षाओं का सामना करने के लिए संघर्ष करना पड़ता है (रोमियों 7; 1 कुरिन्थियों 9:27)। बहुत से मसीही लोग ऐसे हैं जो जानते हैं कि उन्हें ज़्या करना *चाहिए,* लेकिन वे करते नहीं हैं। प्रेरणा देना आवश्यक है। जिस व्यक्ति को ज़ुराक की आवश्यकता है उसे खुराक पर निर्भर रहने की प्रेरणा देनी चाहिए, और जो मसीही न गर्म है न ठण्डा उसे समर्पित होने के लिए प्रेरणा दी जानी चाहिए।

प्रेरणा का अर्थ

ज़्या दूसरों को प्रेरणा दी जा सकती है? ''दास बनकर अगुआई'' करने की एक लैज़्चरशिप में एक भाई ने कहा कि किसी दूसरे को प्रेरणा देना सज़्भव नहीं है, वह प्रेरणा अन्दर से ही आती है।

इस भाई की बात में बेशक दम था। बहुत से लोग विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बड़े-बड़े काम कर लेते हैं, जबकि ऐसे भी लोग हैं जो हर प्रकार की सुविधा होने के बावजूद असफल रहते हैं। तो भी, यह कहने का अभिप्राय कि हम दूसरों को प्रेरणा नहीं दे सकते प्रेरणा की एक संकुचित परिभाषा होगी। प्रेरणा पर लिखी गई सब पुस्तकें और इस विषय पर की गई सब बातें यही सुझाव देती हैं कि दूसरों को प्रेरणा देने, या उनके अन्दर ऐसी भावना पैदा करने में सहायता करने के लिए प्रेरित करने में योगदान दिया जा सकता है जिससे वे कुछ प्राप्त कर सकें। वे उस लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं या नहीं यह उन पर निर्भर है।

दूसरों को प्रेरणा देने में हम ज़्या योगदान दे सकते हैं? इस भाई ने यह भी कहा कि बेशक अगुवे दूसरों को प्रेरणा तो नहीं दे सकते, परन्तु वे ऐसा वातावरण अवश्य दे सकते हैं जिसमें रहकर दूसरों के लिए अपने आपको प्रेरित करने और आगे बढ़ाने में सहायता मिलती है। इस पाठ में हमारी दिलचस्पी इसी बात में है कि कलीसिया के अगुवे ऐसी परिस्थितियां पैदा करने के लिए जिनमें सदस्य वह काम करना चाहें जो उन्हें करना चाहिए, ज़्या कर सकते हैं?

प्रेरणा देने का ढंग

अगुवे कलीसिया को कैसे प्रेरणा दे सकते हैं। सेवकों द्वारा अगुआई का इस्तेमाल करने के बारे में लिखते हुए, जेज़्स मीन्ज़ ने ''प्रेरणा देने की बेकार युज़्तियां''[1] का वर्णन किया और फिर ''प्रेरणा देने की मान्य युज़्तियों'' की चर्चा की:[2] (1) उत्साहित करके प्रेरणा देना, (2) गुणात्मक सेवकाई से प्रेरणा देना (जिसमें वचन की सेवकाई के लिए अगुवे द्वारा प्रार्थना और तैयारी में समय देना शामिल है), और (3) ज़िज़्मेदारी सौंपकर प्रेरणा देना। मीन्ज़ ने कहा:

> नैतिक रूप में लोगों को ऐसे निर्णयों में शामिल करना सही है जो उन्हें प्रभावित करता है। ... लोगों को प्रक्रिया से बाहर निकालकर सही ढंग से प्रेरित नहीं किया जा सकता। अच्छे अगुवे जानते हैं कि सामूहिक विचार में जितने लोग शामिल हों और अपने गुण तथा शज़्ति को लगाएंगे उतना ही उद्देश्यों को पूरा करने की प्रेरणा अधिक मिलेगी। ...[3]

उसकी टिप्पणियों से सहायता मिलती है। इसके अलावा हम छह विशेष पगों का सुझाव देंगे जो कलीसिया के सदस्यों को प्रेरित करने के लिए अगुओं को मानने चाहिए।

स्थिति का विश्लेषण करना

कलीसिया के अगुओं को विशेष सदस्यों के बारे में सोचना आरज़्ज़ करना चाहिए। समस्या यह नहीं है कि पिछले साल छह सदस्य विश्वास से गिर गए। बल्कि यह है कि पिछले साल जॉर्ज, मार्टिन, जॉनी, मरियम, सैली, और जेन विश्वास से गिर गए थे! प्रश्न यह नहीं है कि ''महीने में केवल एक बार इतने लोग ज़्यों आते हैं?'' बल्कि यह है कि ''हैरी महीने में केवल एक बार ज़्यों आता है?'' जब तक कलीसिया के अगुवे अपने आपसे ऐसे प्रश्न नहीं पूछते, तब तक वे वास्तव में झुंड के ''चरवाहों'' या ''पास्टरों'' के काम नहीं कर रहे, और उन्हें अविश्वास की समस्या को सुलझाने की आशा कम होगी।

कोई वज़्ता सुनने वालों को तब तक नहीं समझा सकता जब तक उन्हें यह पता न हो कि उनकी सोच ज़्या है? उनकी परिस्थितियां ज़्या हैं? उन्हें किससे प्रेरणा मिलती है? इसी प्रकार कलीसिया के अगुओं को सदस्यों को सही काम करने की प्रेरणा देने की आशा रखने से पहले आवश्यक है कि उन्हें समझ हो कि वे सदस्य कहां पर हैं, वहां ज़्यों हैं, और उनकी दिलचस्पी इस बात में है। उनमें सुधार करने के लिए यह पहला कदम है।

सही नमूना पेश करना

अच्छी मिशाल पेश करने वाले अगुवे अनुयायियों को प्रेरित कर सकते हैं। कुछ हद तक समझाना वज़्ता की नैतिक अपील पर निर्भर करता है। 1 पतरस 5:3 के अनुसार, ऐल्डरों को ''झुंड के लिए आदर्श'' बनना चाहिए। इससे यह सुझाव मिलता है कि अगुवे जैसा झुंड को बनाना चाहते हैं और जो कुछ चाहते हैं कि वह करे, वह बनने और करने के लिए उन्हें स्वयं कोशिश करनी चाहिए।

बेशक वे हमेशा सज़्पूर्ण उदाहरण तो नहीं दे सकते। कई बार वे फिसलकर गिर जाएंगे। परन्तु अपनी असफलताओं में भी वे अच्छे नमूने दे सकते हैं। वे दिखा सकते हैं कि गिर जाने पर मसीही लोगों को ज़्या करना चाहिए और वे क्षमा मांगकर कैसे नये सिरे से मसीह की सेवा में अपने प्रयास कर सकते हैं।

उत्साहपूर्ण माहौल देना

अगुवे ऐसा वातावरण तैयार कर सकते हैं जिसमें सदस्य कलीसिया में मन से और सेवा करना चाहते हों। सज़्जियां सावधानीपूर्वक देखभाल की जाने वाले खेत में ही बढ़ती हैं। उसी प्रकार कलीसिया में लोग अपनी क्षमता के अनुसार तभी काम कर सकते हैं जब वे उत्साहपूर्ण वातावरण में रहते हों, ''जहां निराशा की बात न हो।''

उत्साहपूर्ण वातावरण कैसे बनता है? जहां तक सज़्भव हो प्रचार और सार्वजनिक संवाद सकारात्मक होना चाहिए। कलीसिया के अगुवे सदस्यों को उत्साहित करके अच्छा करते हैं (1 थिस्सलुनीकियों 5:11, 14; इब्रानियों 3:13)। अगुवे सदस्यों को यह भी बताते हैं कि उनका महत्व है; वे उनके द्वारा किए जाने वाले भले कार्यों के लिए उनकी प्रशंसा करते हैं; उनकी सलाह और सुझाव मांगते रहते हैं; उनमें इनसानी जीवों की तरह दिलचस्पी दिखाते हैं (न कि केवल ''वस्तुओं'' की तरह, अर्थात मानवीय तथ्यों की तरह जो इसलिए काम कर सकते हैं कि अगुवे अच्छे लगें)। वे ऐसा भौतिक वातावरण बनाने की कोशिश करते हैं जिसमें जहां तक सज़्भव हो कलीसिया को सुखद लगे। वे आराधना सभाओं और बाइबल ज़्लासों को उनकी सहायता और विश्वास में बढ़ाने के लिए बनाना चाहते हैं।

यह देखना कि कलीसिया को सिखाया गया है

कलीसिया के अगुवे यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि कलीसिया को सही तरह से सिखाया गया है। लोग तब तक बेहतर *नहीं* करेंगे जब तक वे बेहतर *जानते* नहीं। केवल सिखाना ही इस बात की गारन्टी नहीं होगा कि लोग वहीं करेंगे जो उन्हें करना चाहिए, बल्कि यह सिखाने की असफलता कि मसीही लोगों को ज़्या करना चाहिए निश्चित रूप से इस बात की गारन्टी देगी कि वे इसे नहीं करेंगे। नये नियम का अधिकतर भाग मसीही लोगों को मसीही बने रहकर जीना सिखाने के लिए लिखा गया था। इसलिए मसीही लोगों को सिखाने में चौकसी बरतनी आवश्यक है। यदि हम वैसे ही ''खरी शिक्षा'' देते हैं जो पौलुस ने दी थी और दूसरों को वही शिक्षा देने का आग्रह किया था, तो हमें मसीही जीवन के साथ-साथ यह भी सिखाना आवश्यक है कि कलीसिया में कैसे आना है।

सेवा की रुकावटों को समझने और उन्हें दूर करने की इच्छा करना

कलीसिया के अगुवे कलीसिया में सेवा के लिए लोगों के सामने आने वाली वास्तविक समस्याओं को पहचानकर उन्हें समझ सकते हैं; फिर वे उन समस्याओं का समाधान करने की कोशिश कर सकते हैं। अगुओं को यह समझना आवश्यक है कि कई बार सदस्यों के

पास अधिक न करने के उचित कारण होते हैं। हो सकता है कि कोई इसलिए न आए ज़्योंकि वे बीमार हैं। किसी को रात को आने में परेशानी हो सकती है। समझदार अगुवे सदस्यों द्वारा आने में असफल होने के लिए दिए गए कारणों को मिलाकर उन्हें कारणों के बजाय ''बहाने'' नहीं कहेंगे।

यदि अगुवे सदस्यों की वास्तविक समस्याओं पर विचार करते हैं, उसी के अनुसार योजनाएं बनाते हैं और उन योजनाओं को सदस्यों के सामने रखते हैं, तो हो सकता है कि सदस्य उन योजनाओं का सकारात्मक जवाब देने के लिए प्रेरित हों।

सदस्यों द्वारा महसूस की जाने वाली आवश्यकताओं के आधार पर अपीलें करना

अन्त में, सदस्यों को कलीसिया के काम में और आराधना में विश्वासी बने रहने के लिए समझाने की इच्छा करने वाले अगुओं को, अपनी बिनतियां उन लोगों की आवश्यकताओं के आधार पर करनी चाहिए जिन्हें वे प्रेरित करने की कोशिश कर रहे हैं।[4]

बहुत बार कलीसिया के अगुवे लोगों को मसीही बनाने की कोशिश या उन्हें सचमुच मसीही बनकर रहने की कोशिश के लिए केवल एक ही तरह का ढंग अपनाते हैं कि ऐसा करने से उन्हें स्वर्ग में जाने में सहायता मिलेगी; न कर पाने पर वे नरक में चले जाएंगे। बेशक इस प्रेरणा की ओर ध्यान दिलाने में कोई गलत नहीं है, लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि इसमें पहले से एक बात को मान लिया जाता है कि सुनने वाला नरक से बचकर स्वर्ग में जाने का इच्छुक है। हो सकता है कि यह सत्य न हो। इसलिए आइए दूसरे उद्देश्यों की ओर ध्यान दिलाने की सज़्भावना की जांच करते हैं।

उन दूसरे उद्देश्यों में वे दिलचस्पियां शामिल हैं जो दूसरे लोगों में पहले से होती हैं। जबकि होना यह चाहिए कि वे स्वर्ग में जाने की दिलचस्पी सबसे अधिक रखते हों और नरक से बचना चाहते हों, अर्थात उस समय उनका ध्यान इस बात पर न हो। यदि यह बात है, तो कलीसिया के अगुओं को उनकी प्राथमिकताओं को बदलने में उनकी सहायता करनी चाहिए, लेकिन ऐसा उतावलेपन में नहीं होना चाहिए। कुछ बातों का ध्यान रखा जाना चाहिए जो मुझे लगता है कि आज लोगों द्वारा महसूस की जाने वाली आवश्यकताओं में सबसे ऊपर हैं।

अहंकार: लोग अपने आपको खास समझना चाहते हैं।
स्वीकृति: वे दूसरों को उन्हें खास मानकर उस सोच की पुष्टि करवाना चाहते हैं।
मित्रता: वे लोगों को मित्र बनाना चाहते हैं।
परिवार: वे खुशहाल और सफल परिवार चाहते हैं।
सहायता: वे कठिन समय में सहायता चाहते हैं।
सफलता: वे सफल होना चाहते हैं।

अगुओं को यह समझ आ जाने के बाद कि लोग ज़्या चाहते हैं यह देखने में उनकी सहायता करने की कोशिश करनी चाहिए कि हर उचित इच्छा कलीसिया में और कलीसिया

के द्वारा पूरी हो सके। वे उन्हें दिखा सकते हैं कि उद्धार पाने से, कलीसिया में विश्वास में बने रहकर, और स्वर्ग में जाकर उनकी बहुत सी या अधिकतर तात्कालिक आवश्यकताएं और इच्छाएं पूरी होंगी।

उदाहरण के लिए यदि वे ''कुछ होने'' की इच्छा रखते हैं जो सज़्मान या स्थिति पाने की इच्छा है, तो इससे अच्छा रुतबा और ज़्या हो सकता है कि वे परमेश्वर की संतान बन सकते हैं ? (1 यूहन्ना 3:1, 2)। यदि वे चाहते हैं कि उनके बच्चों को सब अच्छी वस्तुएं मिलनी चाहिए, तो ज़्या हमें उनका ध्यान इस ओर नहीं लगाना चाहिए कि अपने बच्चों को सबसे उज़्म वस्तु वे मसीही माता-पिता और कलीसिया के माहौल में बढ़ने का अवसर देकर दे सकते हैं ? यदि उन्हें मित्र चाहिए या उन्हें लगता है कि वे अकेले और बाहरी हैं, तो कलीसिया से बढ़कर सच्चे मित्र और अच्छी संगति उन्हें और कहां मिल सकती है। यदि वे सचमुच मनुष्य जाति की सेवा करना चाहते हैं, तो ज़्या हमें उन्हें सेवा के लिए कलीसिया द्वारा उपलज़्ध अवसरों के बारे में नहीं बताना चाहिए ? यदि वे किसी बड़े उद्देश्य का भाग बनना चाहते हैं, तो मसीह के उद्देश्य से बढ़कर और उद्देश्य ज़्या हो सकता है ?

परन्तु कई बार कलीसिया में लोगों की ज़रूरतें पूरी नहीं की जा सकती। जब इच्छाओं, आंदोलनों या ऐसी इच्छाओं का सामना करना पड़े जो अधार्मिक हों तो कलीसिया के अगुवे ज़्या कर सकते हैं ?

उदाहरण के लिए हो सकता है कि कुछ लोगों का लक्ष्य ही अत्यधिक धन कमाना हो। जो कि ऐसा उद्देश्य है जिसकी मसीही मूल्यों के साथ तुलना नहीं की जा सकती। कलीसिया के अगुवे उन लोगों से जो धन कमाना चाहते हैं, ज़्या अपील कर सकते हैं ? सबसे पहले तो वे शिक्षा से उन लोगों को अपने लक्ष्य बदलने की आवश्यकता दिखाने का प्रयास करने में सहायता कर सकते हैं। इसके अलावा वे लोगों को यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि उन्हें धन नहीं बल्कि ऐसी सुरक्षा या आनन्द चाहिए जो उन्हें लगता है कि वे धन से पा सकते हैं। फिर वे यह ध्यान दिला सकते हैं कि वह सज़्पज़ि ऐसा आनन्द देने की प्रतिज्ञा करती है जो उसके पास है नहीं। तीसरा, वे लोगों को यह समझने में सहायता कर सकते हैं कि वे धर्म के मार्ग में चलकर उन चीज़ों को पा सकते हैं जिनके पीछे वे पड़े हुए हैं। उदाहरण के लिए, धन से पहचान बनती है। परन्तु मसीह के लिए जीकर भी पहचान बनेगी, अर्थात दूसरे लोग भी हमें जानेंगे और प्रभु भी, न केवल इस जीवन में बल्कि अनन्तकाल में भी, और इसका अर्थ उस पहचान से कहीं अधिक है जो धन से खरीदी जा सकती है।

सारांश

शायद कलीसिया के लिए दूसरों को प्रेरित करने का सबसे महत्वपूर्ण कदम उन्हें दूसरों के स्थान पर रखकर पूछना है, ''हमें अपना व्यवहार बदलने के लिए ज़्या करना होगा ?'' फिर उस प्रश्न के उज़र या उज़रों के आधार पर अपने ढंग और अपील बनाएं।

ज़्या लोगों को समझाने का प्रयास करना उचित है ? पौलुस ने कहा, ''सो प्रभु का भय मानकर हम लोगो को समझाते हैं'' (2 कुरिन्थियों 5:11)। उसकी समझाने वाली शज़्तियां

फिलेमौन के नाम के छोटे से पत्र से स्पष्ट होती हैं। पौलुस फिलेमौन को भगौड़ा हुए दास उनेसिमुस को ग्रहण करने के लिए समझाने जा रहा था। उनेसिमुस को पौलुस ने उसके भाग जाने के बाद परिवर्तित किया था, और अब पौलुस फिलेमौन से उसे न केवल दास बल्कि ''प्रिय भाई'' (आयत 16) के रूप में स्वीकार करने की बिनती कर रहा था। स्पष्टतया पौलुस फिलेमौन से कुछ अधिक ही चाहता था। उसने संकेत दिया कि उसकी इच्छा है कि फिलेमौन उनेसिमुस को वापस भेजे ताकि वह पौलुस की सहायता कर सके, और हो सकता है कि उसने यह भी सुझाव दिया हो कि फिलेमौन को चाहिए कि उनेसिमुस को स्वतन्त्र कर दे। (आयत 21)।

पौलुस अपना सुझाव देने के लिए फिलेमौन को कैसे मना पाया?

उसने फिलेमोन की बढ़ाई की (आयतें 4-7)। उसने फिलेमौन से इस आधार पर कि उसे आज्ञा देने का अधिकार तो था लेकिन वह उससे बिनती कर रहा था, (आयतें 8, 9), बूढ़ा आदमी (आयत 9), मसीह का कैदी, फिलेमोन का सहभागी (आयत 17) होने के आधार पर उससे बिनती की। उसने फिलेमौन को उनेसिमुस से अपने मसीही सज़्बन्ध और उसके लिए अपने प्रेम के बारे में बताया (आयतें 10, 12, 13, 16, 17)। पौलुस ने फिलेमौन के लाभ की बात भी की: उनेसिमुस उसके ''बड़े काम का'' (आयत 11) था। पौलुस ने उनेसिमुस से फिलेमोन के सज़्बन्ध की बात भी की, पहले वह उसके किसी काम का नहीं था, लेकिन अब वह उसके बड़े काम का था (आयत 11); जो फिलेमौन की जगह पौलुस की सहायता कर सकता था (आयत 13); ऐसा सज़्बन्ध जो अस्थाई रूप से टूट गया था, लेकिन अब स्थाई रूप में बन गया था (आयत 15); पहले एक गुलाम था लेकिन अब वह प्रिय भाई और फिर से फिलेमौन के परिवार का सदस्य बन गया था (आयत 16)। उसने मसीह के काम के लिए फिलेमौन की चिंता और जिज़्मेदारी की उसकी भावना की ओर ध्यान दिलाया (आयतें 13, 14)। उसके यह कहने के बावजूद कि वह फिलेमोन से जबर्दस्ती नहीं बल्कि स्वेच्छा से यह काम करवाना चाहता है (आयत 14) फिलेमोन को ''चाहिए'' अर्थात ''जो बात ठीक है'' उसे करना की भावना की ओर ध्यान दिलाया होगा (आयतें 8, 21)। इसके बाद पौलुस ने फिलेमोन की शुक्रगुज़ारी की भावना की ओर ध्यान दिलाया जिसमें पौलुस ने उसके लिए कुछ किया था (आयतें 17-19)। फिर उसने उस सज़्बन्ध की बात की जो फिलेमोन का पौलुस के साथ था (आयत 20)। अन्त में उसने यह आश्वासन दिया कि फिलेमोन वही करेगा जो उसे करना चाहिए (आयत 21)।

कोई भी जो आज मसीही लोगों को समझाता या प्रेरणा देता है उसे फिलेमौन की पुस्तक में पौलुस के उदाहरण को अपनाना चाहिए।

पाद टिप्पणियां

[1]जेज़्स ई. मीन्ज़, *लीडरशिप इन क्रिश्चियन मिनिस्टरी* (ग्रैंड रेपिड्स, मिशी.: बेकर बुक हाउस, 1989),

169–75. [2]वहीं, 175–80. [3]वहीं, 179. [4]देखें जॉर्ज सी. हन्टर 3, द *कोटेजियस कोंगरिगेशन* (नैशविल्ले: अबिंग्डन, 1979), 39 से। वह कहता है ''मानवीय उद्देश्यों से आरज़्भ करो'' और दिखाने लगता है कि कैसे अब्राहम मैसलो की पुस्तक ''हाईआरकी ऑफ़ ह्यूमन मौटिवस'' का इस्तेमाल लोगों को समझाने के लिए किया जा सकता है।